तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय धार
KENDRIYA VIDYALAYA DHAR

सत्र : 2022-23

आज़ादी का अमृत महोत्सव

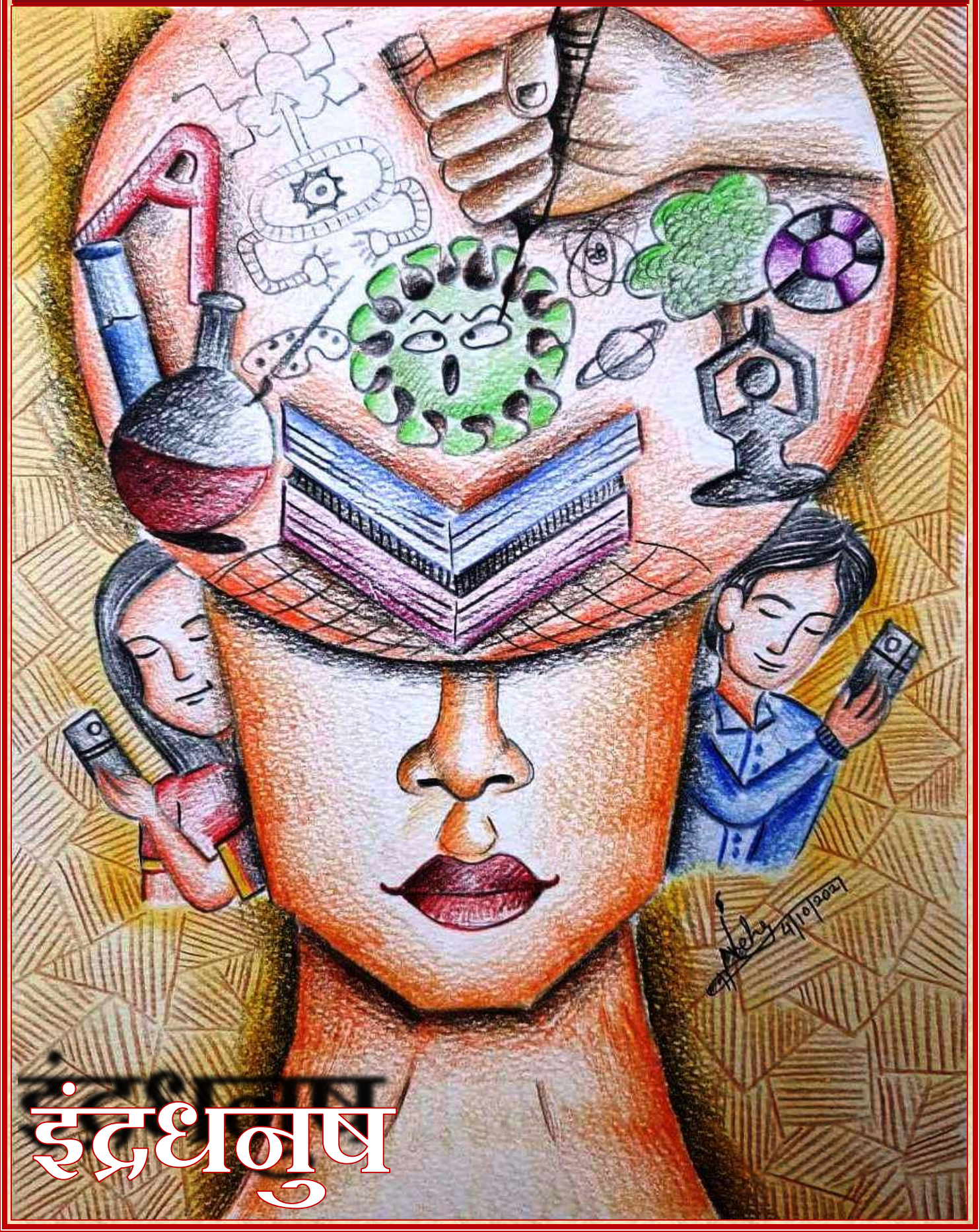

इंद्रधनुष

Sh. Somit Shrivastav
Deputy Commissioner
KVS RO Bhopal

Smt. Rani Dange
Asst. Commissioner
KVS RO Bhopal

Smt. Kiran Mishra
Asst. Commissioner
KVS RO Bhopal

Dr. Pankaj Jain
Chairman
KV Dhar

Sh. Anand Iyer
Principal I/C
KV Dhar

Smt. Manjari Iyer
HM I/C
KV Dhar

प्राचार्य की कलम से

यह "इंद्रधनुष" कई रंगों से सराबोर है | इसमे उन रसों का समावेश हैं | जो मन को आह्लादित करते है | साहित्यकर्म की ओर उत्साहित नन्हें कलमकारो का जमावड़ा हैं यहाँ, वही कविताऐ विभिन्न नन्हे कवियों की सुघड़ अनघढ़ रचना धर्मिता को स्थान देती हैं | "इंद्रधनुष" एक ऐसा प्रयास हैं जो रसानुभूति और आनंद से भर दे |

यह प्रतिबिंब है हमारी वार्षिक गतिविधियों, उपलब्धियों और प्रेरणा की परिणति का |

आपका स्नेह और शुभ कामनाएँ ऊर्जा देती हैं |

शुभाकांक्षी

आनंद अय्यर, प्राचार्य प्र.

INDEX

Sr.No.	Department	Page No.
1	Art and Craft Department	5
2	Primary Department	24
3	Hindi Department	31
4	Computer Department	39
5	Sanskrit Department	45
6	English Department	66
7	Examination Department	74
8	Editorial Board	79

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय धार
KENDRIYA VIDYALAYA DHAR

सत्र : 2022-23

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कला एवं शिल्प विभाग

VEDIKA BHURIYA 7th B

KIRTAN BHATIYA 7th B

STONE ART ACTIVITY

STONE ART MYRA MUKATI 6th A

TANISHKA CHOUHAN 6th B

PRIYA GIRWAL 7th B

ISHA THAKUR 9th A

MYRA MUKATI 6th A

JHANVI 10th B

BHAVIKA PALVE 9th A

JHANVI 10th A

ISHA THAKUR 9th A

CLOTH PAINTING JAGRATI DEVAL 6th A

CLOTH PAINTING TANISHKA CHOUHAN 6th B

AASTHA BHANDARI 10th B

ANIKA RATHORE 10th B

DEVANSH 10th A

AADITYA SAXENA 9th B

Prashati Dave 10th

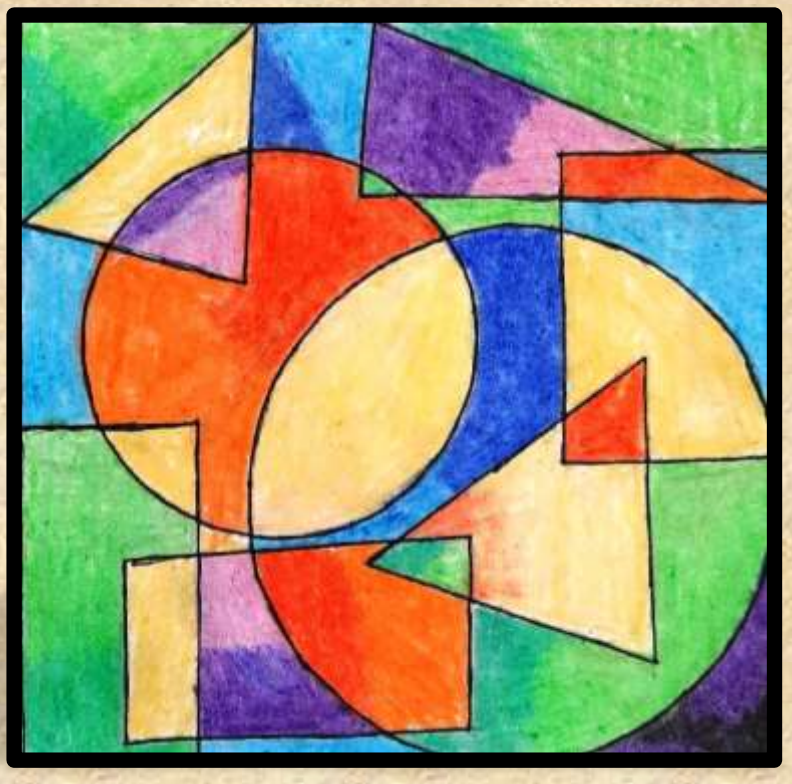

BHAVESH SEN 6th A

ICHHAA GUPTA 8th B

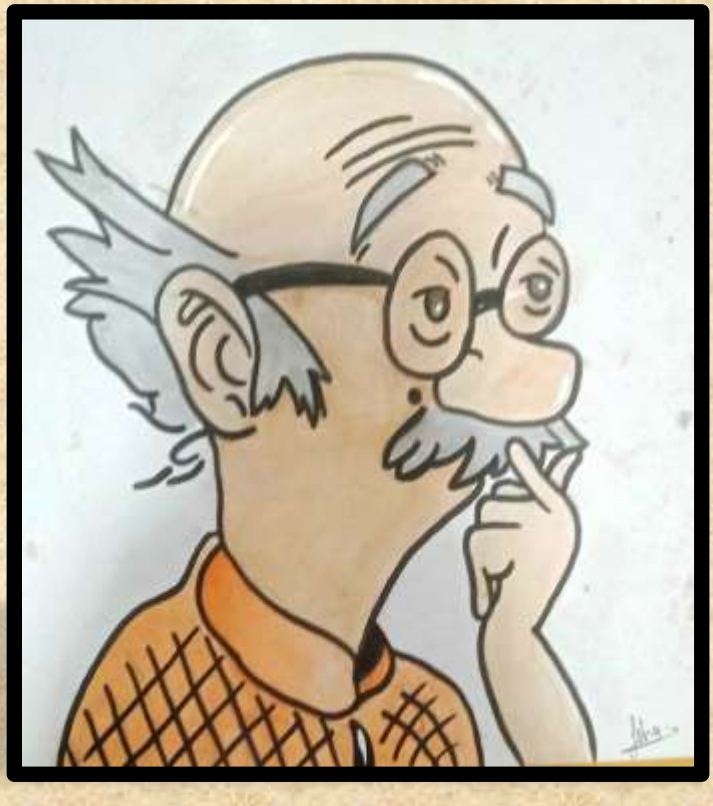

ISHA THAKUR 9th A

IKA MANDHANYA 7th B

JAGRATI DEVAL 6th B

ASHUTOSH SAXENA 10th A

RASHI JAIN 12th B

Mihika Rajpurohit 8th A

Durva lad 12th B

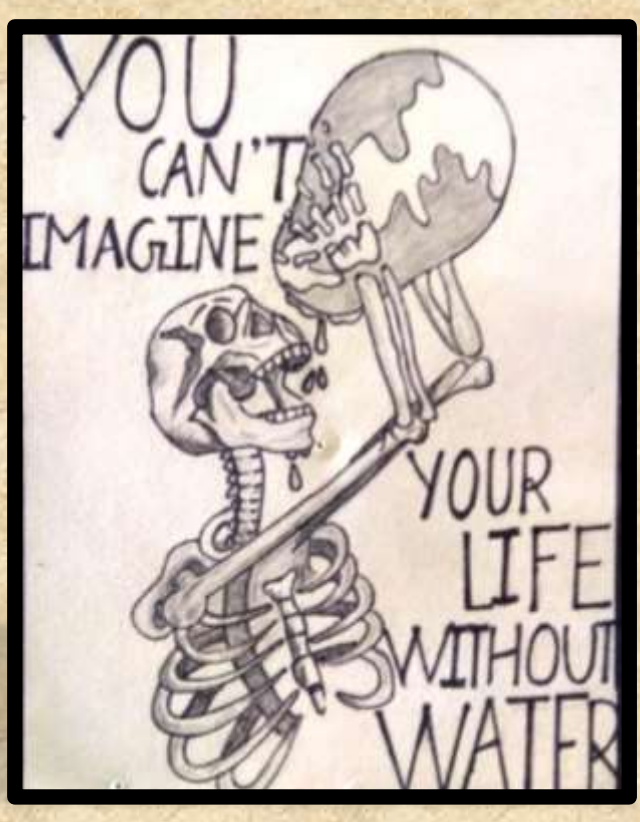

Harshita Chouhan 9th A

Parth Savdwekar 8th B

Rajveer Dawar 6th B

Navya Mourya 6th A

Jagriti Walia 6th A

Abhishek Kushwaha 6th A

Purva Parmar 6th A

Priyansh Chouhan 6th A

केन्द्रीय विद्यालय धार
KENDRIYA VIDYALAYA DHAR

सत्र : 2022-23

आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्राथमिक विभाग

Grand Parent's Day

Art Activities

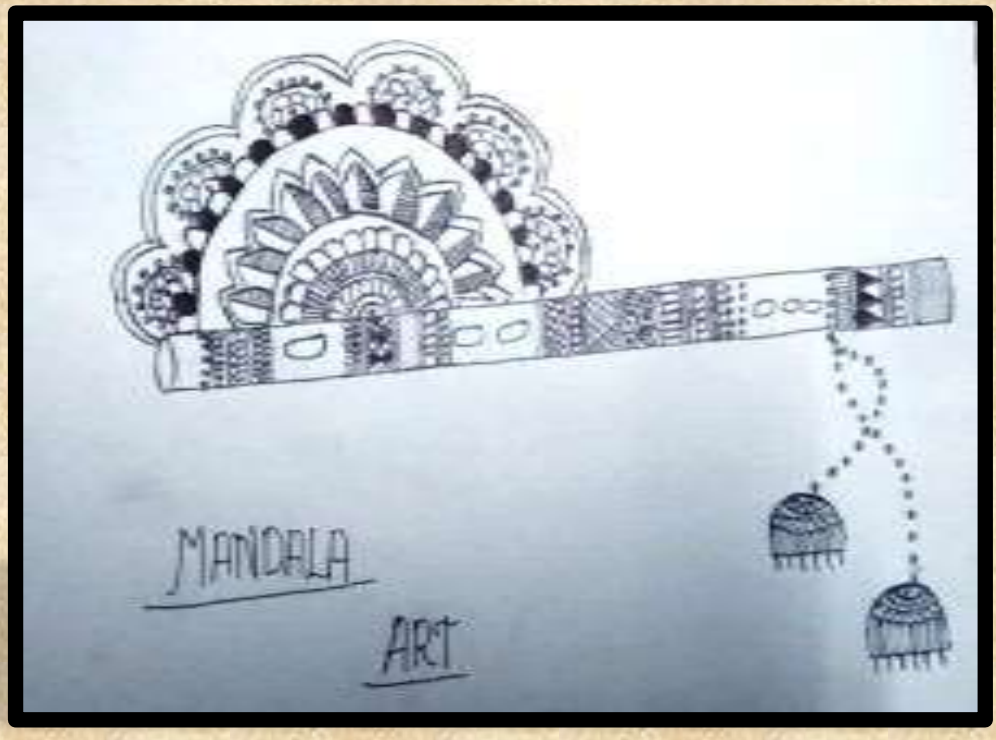

Art Activities

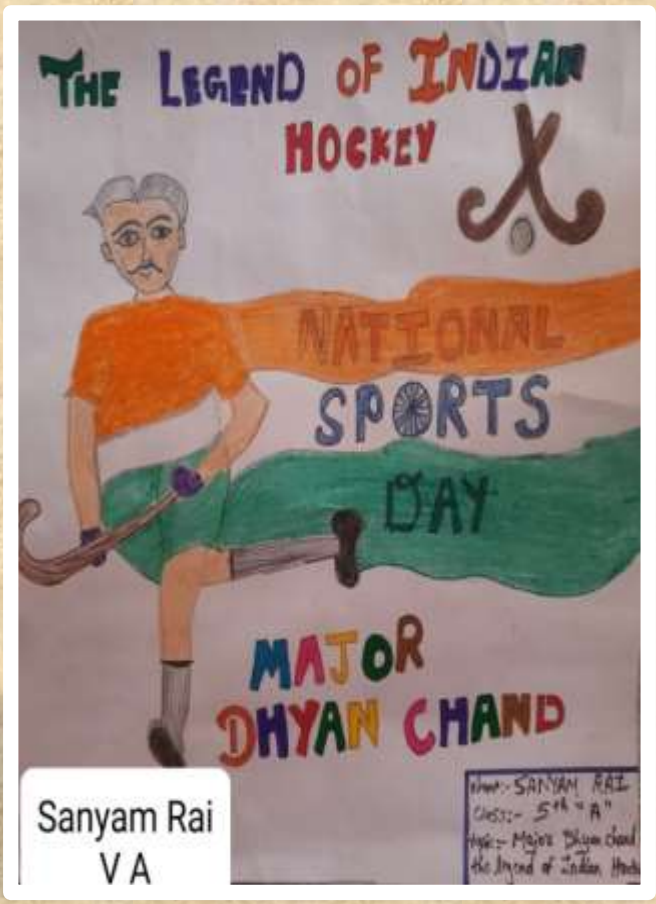

Art Activities

Youth Day Activity

100 Days Reading Campaign

केन्द्रीय विद्यालय धार
KENDRIYA VIDYALAYA DHAR

सत्र : 2022-23

आज़ादी का अमृत महोत्सव

परीक्षा का करें,अभिनंदन

परीक्षा से डरे नहीं,करें हम अभिनन्दन,
हमारी साधना, श्रम का हो मूल्यांकन,
हम रहें.तत्पर, श्रध्दा, संकल्प के साथ,
पढ़ने की व्यवस्था,पुस्तक हो हर हाथ,
अशिक्षा केअंधकार को,लगनशिक्षा से भगाना,
जीवन मे,शिक्षा से उजियारा लाना,
कौशल की किरणों से भागे, जीवन का अंधियारा,
शिक्षा का मंदिर विद्यालय, हम सबको प्यारा,
कुशल गुरुओ व्दारा, गढ़ता जीवन हमारा,
हमने पाठ पढ़ा यहां, सबसे रखना भाई चारा,
सबसे न्यारा,सबसे प्यारा,भारत देश हमारा,
इस पर न्योछावर,तन मन जीवन सारा,
इसकी आन शान बढाने कदम ताल मिलाना,
उल्लासित हो मन ,नही हो प्रमाद निराशा,
सफलता का मूल मंत्र,मन मे जीवंत आशा,
रोज करें योग रहे निरोग, स्वच्छ होवे परिवेश,
सबके हित की करें बात, रहे सदैंव प्रेम से साथ,
अर्जुन धनुर्धर परीक्षा मे हुआ सफल,
श्रद्धा,लगन,परिश्रम अभ्यास के बल,
परीक्षासे निखरे,व्यक्तित्व,संवरे जीवन,
कठिनाई कसौटी,करें समय मूल्यांकन,
लगन,अगन में,तपकर निखरे जीवन,
घबराए नहीं परीक्षाका करें अभिनंदन।

तेजस्विनी उपाध्याय'
कक्षा 9वी 'अ'

माँ

माँ.....

दूनियाँ मै सबसे अनोखी होती है माँ,

अपने सब दुख भूल,परिवार व बच्चो के लिये

जीती है माँ।

चोट हमे लगती है, रोती है माँ।

हमारी छोटी सी खुशी में खुश हो जाती है माँ।

हमे पेट भर खाना खिला के,

खुद भूखे पेट सो जाती है माँ।

हमारी इच्छाओं को पूरा कर,

अपनी इच्छाओं को दबा लेती है माँ।

चाहे कितने भी दुख हो,

परिवार व बच्चो के सामने छिपा लेती है माँ।

हम चाहे कितना भी छिपा ले

अपनी परवाह छोड़

हमेशा हमारी परवाह में लगी रहती है माँ

सच, सबसे प्यारी होती है माँ।

इस धरती पर, भगवान का एक अनोखा रूप होती है माँ

सच मे सब से प्यारी व अनमोल होती है माँ।

~अन्वी पवाँर, 9वी "ब"

हमारे वीर सेनानी

वो शिर वीर वो धरती के वीर,

हैं हमारे वीर सेनानी,

हर बार डट के सामना करते उन शत्रु से,

वो कहते हैं वो हमारे वीर सेनानी,

हम बैठे हैं खुशी से अपने घर,

इसलिए क्योंकि वो खड़े वह उस सरहद

पर अपनी जीजान से लड़ के लिए,

वो हैं हमारे वीर सेनानी,

कितनो ने अपनी जान गवई,

इसलिए इज्जत करो उनकि

जो लड़ मरते हैं हमारे लिए,

वो हैं हमारे वीर सेनानी|

नाम - मनस्वी कुंटे

कक्षा- 9वी अ

गुरु

गुरु के बिना ज्ञान नहीं,

ज्ञान के बिना कोई महान नहीं,

भटक जाता है जब इंसान,

तब गुरु ही देता है ज्ञान....।
ईश्वर के बाद अगर कोई है, तो वह गुरु है...।

दुनिया के वाक्य जो करता है, वह गुरु है...।

हमें जो अच्छा इंसान बनाता है, वह गुरु है...।

नाम अभिषेक बघेल

कक्षा दसवीं अ

खूब हंसो... खूब जीयो...
चुटकुले

1. डॉक्टर- कहिए कैसे आना हुआ
राजू- डॉक्टर साहब लीवर में दर्द हो रहा है
डॉक्टर- शराब पीते हैं?
राजू- हां हां बिल्कुल पर छोटा पैक ही बनाना
2. हम भारतीय आसानी से किसी पर भरोसा नहीं करते सोते हुए व्यक्ति से भी पूछ लेते हैं सो रहे हैं क्या?
3. पंखा चले तो हवा देता है पंखा चले तो हवा देता है पंखा चले तो हवा देता है इतने गौर से क्या पढ़ रहे हो पंखा चलेगा तो हवा ही देगा ना रसगुल्ले थोड़ी ना देगा...
4. अगर मम्मी को मॉम पापा को डेट तो सासु मां को सोस कह सकते हैं क्या....??
5. टीचर- तुमने कभी कोई नेक काम किया है
सोनू- हां सर बुजुर्ग धीरे-धीरे अपने घर जा रहे थे मैंने कुत्ता पीछे लगा दिया सोचा जल्दी पहुंच गया।

नाम- किरण लववंशी
कक्षा- आठवीं ब

बूझो तो जानो
पहेलियां

1. तीन अक्षर का मेरा नाम उल्टा सीधा एक समान?
2. फूल भी हूं फल भी हूं और हूं मिठाई तो बताओ क्या हूं मैं भाई?
3. किस सवाल का जवाब हर वक्त बदलता रहता है?
4. जल से भरा एक मटका जो है सबसे ऊंचा लड़का पी लो पानी जरा नहीं है खट्टा?
5. ऐसी कौन सी चीज है जिसकी परछाई नहीं होती?
6. ऐसी कौन सी चीज है जो धूप में नहीं सूखती?
7. मैं मरू मैं कटु तू क्यों रोए?
8. तीन पैर की तितली नहा धोकर निकली?
9. चार है रानियां और एक है राजा हर एक काम में उनका साझा?
10. बूझो भैया एक पहेली जब काटो तब नई नवेली?

उत्तर- 1. जहाज 2. गुलाब जामुन 3. टाइम क्या हुआ है ? 4. नारियल 5. सड़क 6. पसीना 7. प्याज 8. समोसा 9. उंगली और अंगूठा 10. पेंसिल

कहानी

चतुर बीरबल

एक दिन, एक अमीर व्यापारी बीरबल के पास आया। उन्होंने बीरबल से कहा, "मेरे घर में सात नौकर हैं। उनमें से एक ने मेरे कीमती मोतियों का बैग चुरा लिया है। आप कृपया चोर का पता लगाएं।" इसलिए बीरबल अमीर आदमी के घर गए। उसने सभी सात नौकरों को एक कमरे में बुलाया। बीरबल ने उनमें से हर एक को एक छड़ी दी। फिर कहा, "ये जादू की छड़ें हैं। बस अब इन सभी छड़ियों की लंबाई बराबर है। उन्हें अपने साथ रखो और कल लौटो। अगर घर में कोई चोर है, तो उसकी छड़ी कल तक एक इंच बढ़ जाएगी।"

जिस नौकर ने मोतियों की थैली चुराई थी, वह डर गया था। उसने सोचा, "अगर मैंने अपनी छड़ी से एक इंच का टुकड़ा काट लिया, तो मैं पकड़ा नहीं जाऊंगा।" इसलिए उसने छड़ी को काट दिया और इसे एक इंच छोटा कर दिया। अगले दिन बीरबल ने नौकरों से छड़ी इकट्ठी की।

बीरबल ने पाया कि एक नौकर की छड़ी एक इंच कम है। बीरबल ने उस पर उंगली उठाई और कहा, "यह रहा चोर।" नौकर ने अपना अपराध कबूल कर लिया। उसने मोतियों का थैला लौटा दिया। और चोर को जेल भेज दिया गया।

नाम- अक्षा खान
कक्षा- आठवीं ब

हिन्दी पहेलियाँ

पहेली 1

हरा हू पर पत्ता नही

नकलची हू पर बंदर नही

बूझो तो मेरा नाम सही

उत्तर तोता

पहेली 2

काला है पर साप नही , लंबा है पीआर रस्सी नही , बताओ मै कौन ?

उत्तर चोटी

पहेली 3

वह कोन है जो आपकी नाक पकड़कर आपके कान पकड़कर बेठता है ?

उत्तर चश्मा

पहेली 4

एक थाल मोतियों से भरा

सबके सिर पे उल्टा धरा

चारों ओर फिरे वो थाल

मोती उस से 1 न गिरे

उत्तर तारे

पिता

पिता एक उम्मीद हैं एक आस हैं,

परिवार की हिम्मत और विश्वास हैं,

बहार से सख्त और अन्दर से नरम हैं,

उसके दिल में दफ़न कई मरम हैं,

पिता संघर्ष की आंधियो में होसलो की दिवार हैं,

परेशानियों से लड़ने को दो धारी तलवार हैं,

बचपन में खुश करने वाला बिछोना हैं,

पिता जिम्मेदारियों से लदी गाड़ी का सारथी हैं,

सबको बराबर का हक़ दिलाता एक महारथी हैं,

सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है,

इसी में तो माँ और बच्चो की पहचान हैं,

पिता जमीर हे, पिता जागीर हैं,

जिसके पास ये हैं वह सबसे अमिर हैं,

कहने को तो सब उपर वाला देता हैं,

पर खुदा का ही एक रूप पिता का शरीर हैं,

तरुण कटारे
कक्षा- आठवीं ब

विचार

जिसके पास धैर्य है वह जो चाहे वो पा सकता हैं।

- बेंजामिन फ्रेंकलिन

कोई व्यक्ति अपने कार्यों से महान होता हैं, अपने जन्म से नहीं।

- चाणक्य

महानता कभी न गिरने में नहीं हैं बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में हैं।

- कन्फ़्यूशियस

विश्वास वह शक्ति हैं जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी प्रकाश किया जा सकता हैं।

- हेलेन केलर

खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहता हैं।

- महात्मा गाँधी

मैं जिस व्यक्ति से भी मिलता हूँ वह किसी न किसी रूप में मुझसे बेहतर हैं।

- राल्फ वाल्डो इमर्सन

दूसरों के लिए जीने वाला व्यक्ति कभी भी नीरश और परेशान नहीं होता हैं।

- गौतम बुद्ध

मोक्षिता हरवाल
कक्षा- सातवीं अ

केन्द्रीय विद्यालय धार
KENDRIYA VIDYALAYA DHAR

सत्र : 2022-23

आज़ादी का अमृत महोत्सव

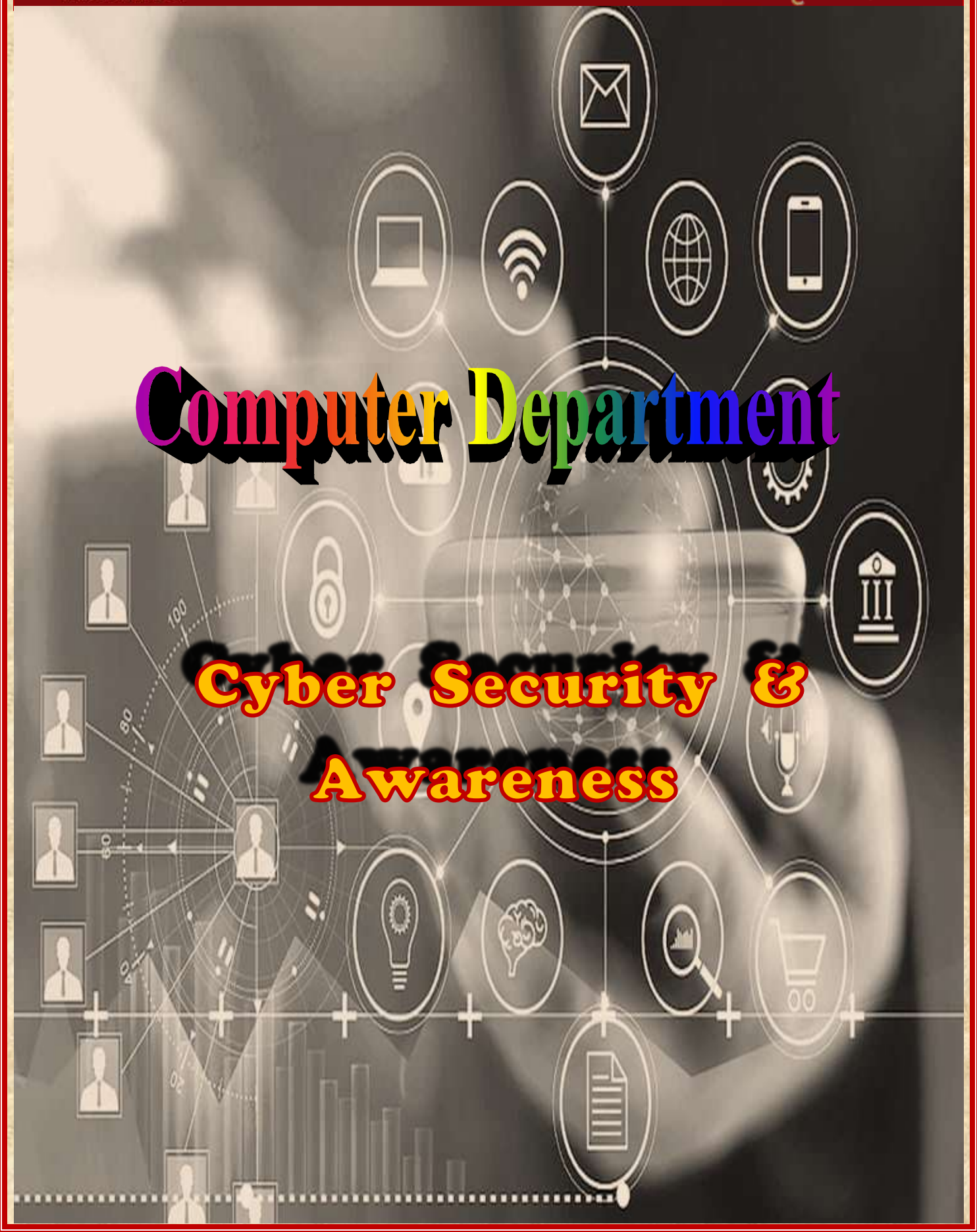

Computer Department

Cyber Security & Awareness

Poster Making Competition

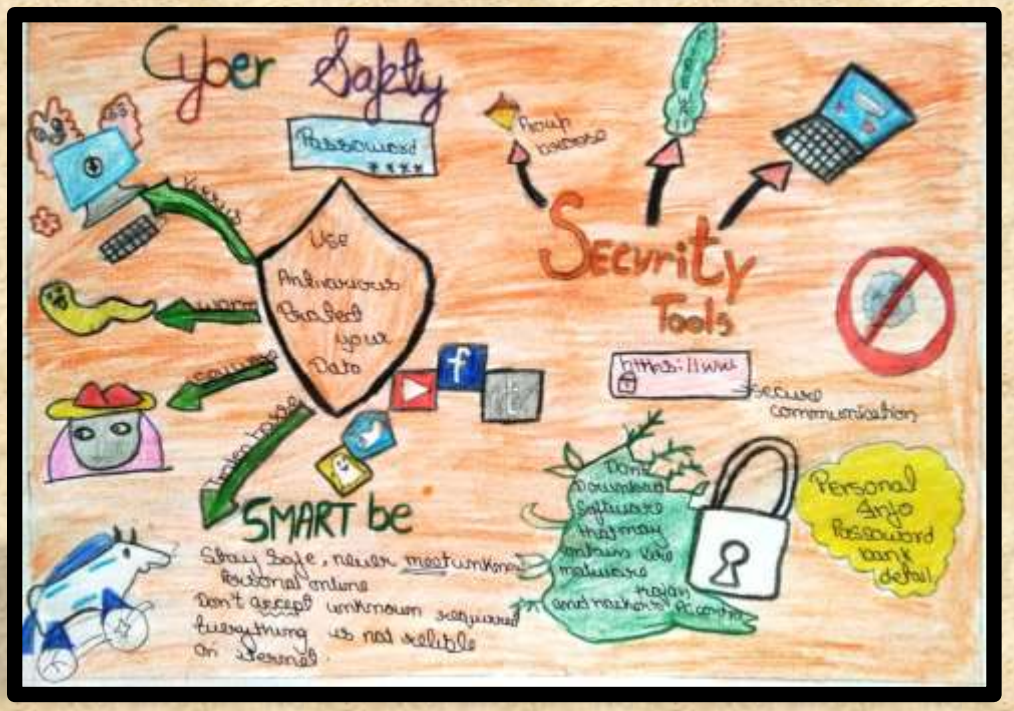

Riva Sisodiya 9th A

Bhupendra Badguiar 6th A

Avni Pawar 9th B

Avni Chouhan 6th A

Janhavi Solanki 10th B

Bhavesh Muvel 7th B

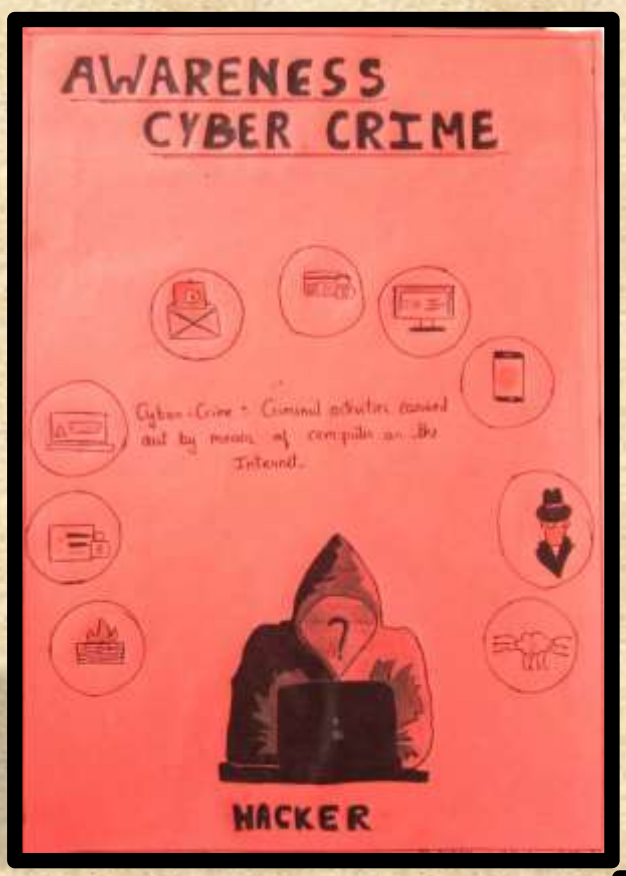

Raiveer Jaiswal 8th B

Janhavi Solanki 10th B

Kirtan Bhativa 7th B

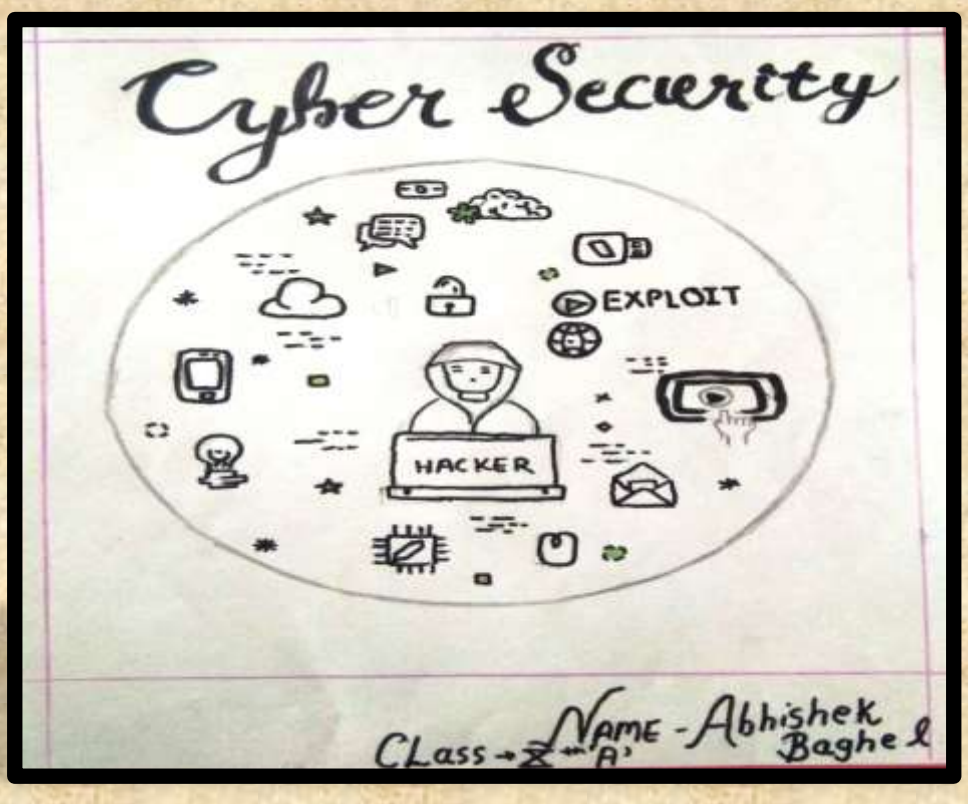

Abhishek Baghel 10th A

संस्कृत विभाग:

संस्कृत प्रार्थना

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ: ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा ॥

भावार्थ :- हे हाथी के जैसे विशालकाय जिसका तेज सूर्य की सहस्त्र किरणों के समान हैं। बिना विघ्न के मेरा कार्य पूर्ण हो और सदा ही मेरे लिए शुभ हो ऐसी कामना करते हैं।

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपद: ।
शत्रुबुध्दिविनाशाय दीपजोतिर्नामोस्तुते ॥

भावार्थ :- ऐसे देवता को प्रणाम करती हूँ ,जो कल्याण करता है, रोग मुक्त रखता है, धन सम्पदा देता हैं, जो विपरीत बुध्दि का नाश करके मुझे सद मार्ग दिखाता हैं, ऐसी दीव्य ज्योति को मेरा परम नमस्कार हो।

आदित्यनमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने दीर्घ आयुर्बलं वीर्य तेजस तेषां च जायत।
अकालमृत्युहरणम सर्वव्याधिविनाशम सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धरायाम्यहम ॥

भावार्थ :- भगवान सूर्य को नमस्कार जिस तरह वह बढ़ रहे हैं दिन का आरम्भ हो रहा है जिसका तेज, शक्ति को दीर्घ आयु प्राप्त है जिसे मृत्यु पर विजय प्राप्त है , जो सभी की रक्षा करता है ऐसे सूर्य देवता के चरणों में समस्त तीर्थ का सुख है।

सूर्य संवेदना पुष्पे:, दीप्ति कारुण्यगंधने।
लब्ध्वा शुभम् नववर्षेअस्मिन् कुर्यात्सर्वस्य मंगलम् ॥

भावार्थ :- जिस तरह सूर्य प्रकाश देता है, पुष्प देता है, संवेदना देता है और हमें दया भाव सिखाता है उसी तरह यह नव वर्ष हमें हर पल ज्ञान दे और हमारा हर दिन, हर पल मंगलमय हो।

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा॥

भावार्थ :- ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को मेरा नमस्कार, वर दायिनी माँ भगवती को मेरा प्रणाम। अपनी विद्या आरम्भ करने से पूर्व आपका नमन करता हूँ , मुझ पर अपनी सिद्धि की कृपा बनाये रखें।

या देवी सर्वभूतेशु, शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः॥

भावार्थ :- देवी सभी जगह व्याप्त है जिसमे सम्पूर्ण जगत की शक्ति निहित है ऐसी माँ भगवती को मेरा प्रणाम, मेरा प्रणाम, मेरा प्रणाम।

या कुंदेंदुतुषारहार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमंडितकरा, या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा॥

भावार्थ :- जो विद्या देवी कुंद के पुष्प, शीतल चन्द्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह श्वेत वर्ण की है और जिन्होंने श्वेत वर्ण के वस्त्र धारण किये हुए है, जिनके हाथ में वीणा शोभायमान है और जो श्वेत कमल पर विराजित हैं तथा ब्रह्मा,विष्णु और महेश और सभी देवता जिनकी नित्य वन्दना करते है वही अज्ञान के अन्धकार को दूर करने वाली माँ भगवती हमारी रक्षा करें।

आदित्य त्रिवेदी
कक्षा- VI

गुरु स्तुतिः

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अर्थात् गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है। गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है। उन सद्गुरु को प्रणाम है।

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

जो अखण्ड है, सकल ब्रह्माण्ड में समाया है, चर-अचर में तरंगित है। उस (प्रभु) के तत्व रूप को जो मेरे भीतर प्रकट कर मुझे साक्षात दर्शन करा दे, उन गुरु को मेरा शत् शत् नमन है। अर्थात् वही पूर्ण गुरु है।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अर्थात् अज्ञानरूपी अन्धकार से अन्धे हुए जीव की आँखें जिसने ज्ञानरूपी काजल की श्लाका से खोली हैं, ऐसे श्री सदगुरू को नमन है, प्रणाम है।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः।
तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थादेशको गुरुरुच्यते॥

अर्थात् धर्म को जाननेवाले, धर्म मुताबिक आचरण करनेवाले, धर्मपरायण, और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करनेवाले गुरु कहे जाते हैं।

नमोस्तु गुरुवे तस्मै, इष्टदेव स्वरूपिणे।
यस्य वाग्मृतम् हन्ति,विषं संसार संज्ञकम्॥

अर्थात् उन गुरूदेव रूपी इष्टदेव को वन्दन है, जिसकी अमृत वाणी अज्ञानता रूपी विष को नष्ट कर देती है।

निवर्तयत्यन्यजनं प्रमादतः स्वयं च निष्पापपथे प्रवर्तते।
गुणाति तत्त्वं हितमिच्छुरंगिनाम् शिवार्थिनां यः स गुरु र्निगद्यते॥

अर्थात् जो दूसरों को प्रमाद करने से रोकते हैं, स्वयं निष्पाप मार्ग पर चलते हैं। हित और कल्याण की कामना रखनेवाले को तत्त्वबोध कराते हैं, उन्हें गुरु कहते हैं।

नीचं शय्यासनं चास्य सर्वदा गुरुसंनिधौ।
गुरोस्तु चक्षुर्विषये न यथेष्टासनो भवेत्॥

अर्थात् गुरु के पास हमेशा उनसे छोटे आसन पे बैठना चाहिए, गुरु आते हुए दिखे, तब अपनी मनमानी से नहीं बैठना चाहिए।

किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटि शतेन च।
दुर्लभा चित्त विश्रान्तिः विना गुरुकृपां परम्॥

अर्थात् बहुत कहने से क्या ? करोडों शास्त्रों से भी क्या ? चित्त की परम् शांति, गुरु के बिना मिलना दुर्लभ है।

प्रेरकः सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः॥

अर्थात् प्रेरणा देनेवाले, सूचन देनेवाले, (सच) बतानेवाले, (रास्ता) दिखानेवाले, शिक्षा देनेवाले, और बोध करानेवाले – ये सब गुरु समान है।

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकार स्तेज उच्यते।
अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते॥

अर्थात् 'गु'कार याने अंधकार, और 'रु'कार याने तेज। जो अंधकार का (ज्ञान का प्रकाश देकर) निरोध करता है, वही गुरु कहा जाता है।

शरीरं चैव वाचं च बुद्धिन्द्रिय मनांसि च।
नियम्य प्राञ्जलिः तिष्ठेत् वीक्षमाणो गुरोर्मुखम्॥

अर्थात् शरीर, वाणी, बुद्धि, इंद्रिय और मन को संयम में रखकर, हाथ जोडकर गुरु के सन्मुख देखना चाहिए।

कृतिका मिश्रा
कक्षा -VI (ब)

विद्यार्थीजीवनविषयक श्लोका:

1. विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

भावार्थ: विद्या से विनय अर्थात विवेक व नम्रता मिलती है, विनय से मनुष्य को पात्रता मिलती है यानी पद की योग्यता मिलती है। वहीं, पात्रता व्यक्ति को धन देती है। धन फिर धर्म की ओर व्यक्ति को बढ़ाता और धर्म से सुख मिलता है। इस मतलब यह हुआ कि जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए विद्या ही मूल आधार है।

2. अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं॥

भावार्थ: बड़े-बुजुर्गों का अभिवादन अर्थात नमस्कार करने वाले और बुजुर्गों की सेवा करने वालों की 4 चीजें हमेशा बढ़ती हैं। ये 4 चीजें हैं: आयु, विद्या, यश और बल। इसी वजह से हमेशा वृद्ध और स्वयं से बड़े लोगों की सेवा व सम्मान करना चाहिए।

3. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

भावार्थ: महज इच्छा रखने भर से कोई कार्य पूरा नहीं होता, बल्कि उसके लिए उद्यम अर्थात मेहनत करना जरूरी होता है। ठीक उसी तरह जैसे शेर के मुंह में सोते हुए हिरण खुद-ब-खुद नहीं आ जाता, बल्कि उसे शिकार करने के लिए परिश्रम करना होता है।

4. यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।
चित्ते वाचि क्रियायांच साधुनामेकरूपता॥

भावार्थ: साधु यानी अच्छे व्यक्ति के मन में जो होता है, वो वही बात करता है। वचन में जो होता है यानी जैसा बोलता है, वैसा ही करता है। इनके मन, वचन और कर्म में हमेशा ही एकरूपता व समानता होती है। इसी को अच्छे व्यक्ति की पहचान माना जाता है।

5. न चोरहार्यं न राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

भावार्थ:एक ऐसा धन जिसे न चोर चुराकर ले जा सकता है, न ही राजा छीन सकता है, जिसका न भाइयों में बंटवार हो सकता है, जिसे न संभालना मुश्किल व भारी होता है और जो अधिक खर्च करने पर बढ़ता है, वो विद्या है। यह सभी धनों में से सर्वश्रेष्ठ धन है।

6. षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तद्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

भावार्थ: 6 अवगुण मनुष्य के लिए पतन की वजह बनते हैं। ये अवगुण हैं, नींद, तन्द्रा (थकान), भय, गुस्सा, आलस्य और कार्य को टालने की आदत।

7. काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं।।

भावार्थ: एक विद्यार्थी के पांच लक्षण होते हैं। कौवे की तरह हमेशा कुछ नया जानने की प्रबल इच्छा। बगुले की तरह ध्यान व एकाग्रता। कुत्ते की जैसी नींद, जो एक आहट में भी खुल जाए। अल्पाहारी मतलब आवश्यकतानुसार खाने वाला और गृह-त्यागी।

8. रूप यौवन सम्पन्नाः विशाल कुल सम्भवाः।
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धाः इव किंशुकाः।।

भावार्थ: अच्छा रूप, युवावस्था और उच्च कुल में जन्म लेने मात्र से कुछ नहीं होता। अगर व्यक्ति विद्याहीन हो, तो वह पलाश के फूल के समान हो जाता है, जो दिखता तो सुंदर है, लेकिन उसमें कोई खुशबू नहीं होती। अर्थात मनुष्य की असली खुशबू व पहचान विद्या व ज्ञान ही है।

9. मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि गर्वो दुर्वचनं मुखे।
हठी चैव विषादी च परोक्तं नैव मन्यते।।

भावार्थ: इस श्लोक में कहा गया है कि मूर्खों की पांच पहचान होती हैं। सबसे पहला अहंकारी होना, दूसरा हमेशा कड़वी बात करना, तीसरी पहचान जिद्दी होना, चौथा हर समय बुरी-सी शक्ल बनाए रखना और पांचवां दूसरों का कहना न मानना। श्लोक इन सभी पांच चीजों से बचने की प्रेरणा देता है।

10. दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यालंकृतो सन।
मणिना भूषितो सर्पः किमसौ न भयंकरः।।

भावार्थ:दुर्जन अर्थात दुष्ट लोग भी अगर बुद्धिमान हों और विद्या प्राप्त कर लें, तो भी उनका परित्याग कर देना चाहिए। जैसे मणि युक्त सांप भी भयंकर होता है। इसका मतलब यह हुआ कि दुष्ट लोग कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों, उनकी संगत नहीं करनी चाहिए।

मिहिका मानधन्या
कक्षा -VII – (ब)

नीति श्लोका:

1. देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरो रुष्टे न कश्चन:।
गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशय:॥

भावार्थ: देवताओं के रूठ जाने पर गुरु रक्षा करते हैं, किंतु गुरु रूठ जाए, तो उस व्यक्ति के पास कोई नहीं होता। गुरु ही रक्षा करते हैं, गुरु ही रक्षा करते हैं, गुरु ही रक्षा करते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। इसका मतलब यह है कि अगर पूरा विश्व व भाग्य भी किसी से विमुख हो जाए, तो गुरु की कृपा से सब ठीक हो सकता है। गुरु सभी मुश्किलों को दूर कर सकते हैं, लेकिन अगर गुरु ही नाराज हो जाए, तो कोई अन्य व्यक्ति मदद नहीं कर सकता।

2. अनादरो विलम्बश्च वैमुख्यम निष्ठुर वचनम।
पश्चतपश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च॥

भावार्थ: अपमान व अनादर के भाव से दान देना, देर से दान देना, मुंह फेरकर दान देना, कठोर व कटु वचन बोलकर दान देना और दान देने के बाद पछतावा करना। ये सभी पांच बातें दान को पूरी तरह दूषित कर देती हैं।

3. अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

भावार्थ: छोटे चित यानी छोटे मन वाले लोग हमेशा यही गिनते रहते हैं कि यह मेरा है, वह उसका है, लेकिन उदारचित अर्थात बड़े मन वाले लोग संपूर्ण धरती को अपने परिवार के समान मानते हैं।

4. सुलभा: पुरुषा: राजन् सततं प्रियवादिन:।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ:॥

भावार्थ: हमेशा प्रिय और मन को अच्छा लगने वाले बोल बोलने वाले लोग आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन जो आपके हित के बारे में बोले और अप्रिय वचन बोल व सुन सके, ऐसे लोग मिलना दुर्लभ है।

8. अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

भावार्थ: सभी 18 पुराणों में महर्षि वेदव्यास जी ने दो विशेष बातें कही हैं। पहली बात तो यह है कि परोपकार करना पुण्य है और दूसरी बात लोगों को दुख देना ही पाप हैं।

रामकृष्ण दूबे
कक्षा – VII-B

मम विद्यालयः

मम विद्यालयस्य नाम केन्द्रीय विद्यालय बोलारम् अस्ति। एषः विद्यालयः नगरस्य एकस्मिन सुरम्ये स्थले स्थितमस्ति। अत्र सप्ततिः(54) शिक्षकः-शिक्षिकाः च पाठयन्ति। अत्र सप्तदशशतमधिकं(1200) छात्राः पठन्ति। विद्यालये एकं सुन्दरं उद्यानं अस्ति। यत्र मनोहाणि पुष्पाणि विकसन्ति। मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अपि अस्ति। यत्र छात्राः पुस्तकानि पठन्ति। मम विद्यालये एका विज्ञान प्रयोगशाला, एका गणित प्रयोगशाला च अस्ति। विद्यालये त्रयः संगणककक्षाः अपि सन्ति। शिक्षायाः क्षेत्रे मम विद्यालयः सम्पूर्णनगरे प्रसिद्धः अस्ति। मम विद्यालयस्य सर्वे अध्यापकाः शिक्षायाम् अतीव निपुणाः, योग्याः च सन्ति। विद्यालये प्रतिसप्ताहे बालसभा अपि आयोज्यते। प्रतिवर्षे वार्षिकोत्सवः अपि आयोज्यते। क्रीड़ायाः क्षेत्रे अपि मम विद्यालयस्य प्रमुखं स्थानं अस्ति। अहम् आत्मनं गर्वितः, भाग्यशाली च अनुभवामि यत् अहम् अस्मिन अत्युत्तमे विद्यालये पठामि।...

वी.एस कृति
कक्षा – अष्टमी (अ)

माँ

माँ, माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार,
न त्वया सदृश्य कस्याः स्नेहम्,
करुणा-ममतायाः त्वम् मूर्ति,
न कोअपि कर्त्तुम् शक्नोति तव क्षतिपूर्ति।
तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति,
'माँ' शब्दस्य महिमा अपार,
न माँ सदृश्य कस्याः प्यार,
माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार।

नित्या शर्मा
कक्षा -VI

जय वृक्ष! जय वृक्ष

श्रूयताम् सर्वे वृक्षपुराणम्,
क्रियताम् तथा वृक्षारोपणम्।

वृक्षस्यास्ति सुन्दरम् याति मूलं बहुदूरम्।।
मूलेपी अन्नम्, तस्य काष्ठं कठिनम्,
काष्ठं कठिनं भवति इन्धनार्थम्।
पर्णेषु भवति हरितद्रव्यम्,
अतो हि अस्ति रे पर्ण हरितम्।।

पुष्पम् सुन्दरम्, अतीव मोहकम्,
पुष्पम् तस्य भवति रे देवपूजार्थम्।
फलम् रसमयं, तस्य फलं स्वादपूर्णम्,
फलम् हि अस्ति रे खगस्य अन्नम्।।

जलवातप्रकाशैः निर्माति अन्नम्,
तेन हि अन्नेन वर्धते नित्यम्।
वृक्षस्य दृश्यताम् सर्वम् हि कार्यम्,
जीवनं तस्यास्ति परोपकारार्थम्।।

वृक्षे हि कुर्वन्ति विहगाः नीडम्,
केचित् तु कुर्वन्ति काष्ठे हि छिद्रम्।
आतपे तिष्ठति वर्षानुवर्षम्,
अन्येषां करोति छायाप्रदानम्।।

वृक्षो नैव अत्ति रे स्वकीयं फलम्,
सर्वम् हि अंगम् तस्य लोकहितार्थम्।
जनाः न स्मरन्ति तस्य उपकारम्,
बहुधा कुर्वन्ति वृक्षच्छेदनम्।।

मास्तु रे मास्तु ईदृशं पापं,
यथाशक्ति क्रियताम् वृक्षारोपणम्।
नैव रे नैवास्तु वृक्षकर्तनम्',
सर्वे हि कुर्वन्तु तद्संवर्धनम्।। ...

प्रज्ञा कोष्टी
कक्षा – नवमी (अ)

कः किम् कर्तुम् न शक्तः

अन्धः किमपि न द्रष्टुम् शक्तः
पंगुः क्वापि न चलितुम् शक्तः।
मूकः किमपि न वक्तुम् शक्तः
बधिरः श्रोतुम् भवत्यशक्तः।।
मूढः बोद्धुम् न भवति शक्तः
न चापि भीरुः योद्धुम् शक्तः।
शयने रोगी भावत्यशक्तः
दीनः किमपि न दातुम् शक्तः।।

वृद्धः न भारं वोढुम् शक्तः
ईर्ष्युः कमपि न सोढुम् शक्तः।
नैव धावितुम् स्थूलः शक्तः
लोभी शान्त्या स्वपितुमशक्तः।।
अलसः मूर्खः निद्रायुक्तः
कार्यम् किमपि न कर्तुम शक्तः।
सदैव मिथ्याचरणे शक्तः
नैव स सत्यं द्रष्टुम् शक्तः।।...

ध्रुव कुमारः

एहि एहि वीर रे

एहि एहि वीर रे
वीरतां विधेहि रे
पदं पदं निधेहि रे
भारतस्य रक्षणाय
जीवनं प्रदेहि रे॥
त्वं हि मार्गदर्शकः
त्वं हि देशरक्षकः
त्वं हि शत्रुनाशकः
कालनाग तक्षकः॥

साहसी सदा भवेः
वीरतां सदा भजेः
भारतीय-संस्कृतिं
मानसे सदा धरेः॥
पदं पदं मिलच्चलेत्
सोत्साहं मनो भवेत्
भारतस्य गौरवाय
सर्वदा जयो भवेत॥...

लघुकथा

शृगालस्य चतुरता

एकदा एकः वायसः पिष्टकं चोरितवान्। पिष्टकं चोरयित्वा सः एकस्यां वृक्षशाखायाम् उपविशती स्म। वृक्षतले शृगालः एकः उपारतः आसीत्। वायसमुखे पृष्टकं दृष्ट्वा तं लालसा अभवत् तदा चतुरः सः शृगालः वायसं प्रति उद्देश्यं कृत्वा गायनासीत्... अहो! अद्भुतसुंदरः विहगः एषः।कण्ठस्वरः अपि मधुरः भवेत्... न जाने कथं मधुरं नु गायति अयम्। वायसः स्वीय प्रशंसा श्रुत्वा गदगद नंदित पुलकितः अभवत्। अतः सः गीतं गायनाय यदा हि चंचु विस्फारितम अकरोत् पिष्टकम अधः पतितवान्। अतः किम्! शृगालः पिष्टकं प्राप्य झटिति धावितवान्।.. ...

हिमाक्षी गोयल
कक्षा -VI (अ)

अम्लानि द्राक्षाफलानि

एकदा एकः शृगालः अतीव क्षुधार्तः भवन् आसीत्। समग्र वनम् अनुसन्धित्वा अपि सः। तदा सः भोजनस्य अनुसन्धनाय एकस्मिन् ग्रामे उपस्थितम् अभवत्। तत्र एकं वेदिम् उपरि गुच्छानि गुच्छानि द्राक्षाफलानि उलम्बितानि। द्राक्षाफलं दृष्ट्वा शृगालः अतीव मोदितः अभवत्। "अहो! क्षुधाकाले पक्व-पक्व द्राक्षाफलस्य भोजनस्य आनंदं हि अतुलनीयम्" सः अचिंतयत् द्राक्षाफलानि तु अतीव उच्चे आसन्। बहव लम्फ़झम्पात् अपि तानि तस्य हस्तगतः न अभवन्। "द्राक्षाफलानि अम्लानि। अहम् अम्लफलं न द्राक्षाफलानि खादामि।" एतद् उक्त्वा शृगालः स्थानात् गतवान्।

भावेश मुवेल कक्षा -VII (ब)

उपायः

एकः वृद्धः आसीत्। सः क्षुधितः अभवत्। समीपे एकः आम्रवृक्षः आसीत्। वृद्धः आम्रवृक्षस्य समीपम् अगच्छत्। वृक्षे बहूनि फलानि अपश्यत्। सः अचिन्तयत्अहं वृद्धः। मम शरीरे शक्तिः नास्ति। वृक्षः उन्नत अस्ति। कथम् उपरि गच्छामि। कथं फलं प्राप्नोमि। वृक्षस्य उपरि वानराः आसन्। वृद्धः एकम् उपायम् अकरोत्। सः पाषाणखण्डान् स्वीकृत्य अक्षिपत्। वानराः कुपिताः अभवन्। ते फलानि अक्षिपन्। वृद्धः तानि फलानि स्वीकृत्य सन्तोषेण अखादत्।

दृष्टि गुप्ता (कक्षा -सप्तमी -ब)

किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्।

एकस्मिन् ग्रामे एक महिला वसति स्म। सा एकं नकुलं पालयति स्म। नकुलस्य विषये तस्याः बहुप्रीतिः आसीत्। महिलायाः एकः शिशुः अपि आसीत्। तस्याः गृहस्य समीपे जलं न आसीत्। जलम् आनेतुं सा दूरं गच्छति स्म।एकस्मिन् दिने जलम् आनेतुं सा अगच्छत्। गृहे कोऽपि न आसीत्। तस्याः शिशुः निद्रितः आसीत्। महिला बहिः गता। तदा एकः सर्पः गृहम् आगतः। नकुलः सर्पम् अपश्यत्। सर्पः शिशुसमीपम् अगच्छत्। नकुलः तत्क्षणे एव सर्पस्य उपरि अपतत्। क्षणमात्रेण एव सः सर्पम् अमारयत्। महिला जलं गृहीत्वा आगता। नकुलस्य मुखं रक्तमयम्। सा अचिन्तयत् अयं नकुलं मम शिशुम् अखादत्। अतः एव अस्य मुखं रक्तम्। सा तत्क्षणे एव एकं शिलाखण्डं नकुलस्य उपरि अक्षिपत्। नकुलः मृतः। अनन्तरं सा गृहस्य अन्तः गता। तत्र शिशुः क्रीडति। तत्रैव मृतं सर्पम् अपश्यत। सा बहु दुःखिता अभवत्। अविचारेण मया नकुलः संहतः इति सा पश्चात्तापेन पीडिता अभवत्। अतः किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्। विचारं कृत्वा एव कर्तव्यम्।

आदित्य प्रताप सिन्ह ठाकुर, नवमी (अ)

साधूनां जीवनम्

गङ्गातीरि एकः साधुः आसीत्। सः बहु उपकारं करोति स्म। यः अपकारं करोति तस्यापि उपकारं करोति स्म। एकस्मिन् दिने सः गङ्गानद्यां सनानं कर्तुं नदीं गतवान्। नदीप्रवाहे एकः वृश्चिकः आगतः। साधुः वृश्चिकं दृष्टवान्। तं हस्तेन गृहीतवान्। तीरि स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। किन्तु सः साधोः हस्तम् अदशत्। साधुः तं त्यक्तवान्। वृश्चिकः जले अपतत्। पुनः साधुः वृश्चिकं गृहीत्वा तीरि स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। पुनः वृश्चिकः हस्तम् अदशत्। एवम् अनेकवारं साधुः वृश्चिकं गृहीतवान्। वृश्चिक- अपि अदशत्।नदीतीरि एकः पुरुषः आसीत्।सः उक्तवान्साधुमहाराज। अयं वृश्चिकः दुष्टः। सः पुनः पुनः दशति। भवान् किमर्थं तं हस्ते वृथा स्थापयति। वृश्चिकं त्यजतु।साधुः उक्तवान्वृश्चिकः क्षुद्रः जन्तुः। दंशनं तस्य स्वभावः। सः स्वस्य स्वभावं न त्यजति। अहं तु मनुष्यः। अहं मम परोपकारस्वभावं कथं त्यजामि।यः अपकारिणाम् अपि उपकारं करोति सः एव साधुः भवति।

हर्षिता चौहान (कक्षा – नवमी -अ)

संस्कृत सूक्तियां

- **तमसो मा ज्योतिर्गमय।**
  अर्थ– अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये।
- **परोपकाराय सतां विभूतयः।**
  अर्थ– सज्जनों की विभूति हमेशा परोपकार के लिए होती है।
- **विद्या विहीन पशु।**
  अर्थ– विद्याविहीन (विद्या को ग्रहण ना करने वाला) मनुष्य पशु के समान होता है।
- **आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महानरिपुः।**
  अर्थ– आलस्य मनुष्य के शरीर में स्थित घोर शत्रु है।
- **अहिंसा परमो धर्मः।**
  अर्थ– अहिंसा ही सबसे बड़ा (परम) धर्म होता है।
- **सहसा विदधीत न क्रियाम्।**
  अर्थ– कार्य को बिना विचारे नहीं करना चाहिए।

- **नास्ति विद्या समं चक्षु।**
  अर्थ्– संसार में विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं है।
- **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताः।**
  अर्थ– जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान किया जाता है, उस घर से देवगण प्रसन्न होते हैं।
- **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**
  अर्थ– शरीर धर्म का मुख्य साधन है।
- **गुणेर्विहीना बहुजल्पयन्ति।**
  अर्थ- गुणहीन व्यक्ति बहुत बकवास करते हैं।
- **तमसो मा ज्योतिर्गमय।**
  अर्थ– अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये।
- **वसुधैव कुटुंबकम।**
  अर्थ– पृथ्वी के सभी वासी एक परिवार है।
- **परोपकाराय सतां विभूतयः।**
  अर्थ– सज्जनों की विभूति हमेशा परोपकार के लिए होती है।
- **विद्या विहीन पशु।**
  अर्थ– विद्याविहीन (विद्या को ग्रहण ना करने वाला) मनुष्य पशु के समान होता है।
- **आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महानरिपुः।**
  अर्थ– आलस्य घोर शत्रु है।
- **अहिंसा परमो धर्मः।**
  अर्थ– अहिंसा ही सबसे बड़ा (परम) धर्म होता है।
- **मा कश्चिद् दुख भागभवेत।**
  अर्थ– कोई दु:खी न हो अर्थात सभी सुखी रहे।
- **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।**
  अर्थ– हमारी जन्मस्थली स्वर्ग से भी बड़ी होती है।
- **नास्तिको वेदनिन्दकः।**
  अर्थ– वेदों की निन्दा करने वाला इंसान नास्तिक होता है।

- **मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।**
  अर्थ– किसी दूसरे के धन का लोभ नहीं करना चाहिए।
- **योग: कर्मसु कौशलम्।**
  अर्थ– समत्वरूप योग ही कर्मबंधन से छूटने का उपाय है।
- **सहसा विदधीत न क्रियाम्।**
  अर्थ– कार्य को बिना विचारे नहीं करना चाहिए।
- **अशांतस्य कुत: सुखम्।**
  अर्थ– अशांत यक्ति को कभी सुख नहीं मिल सकता है?
- **अनार्य: परदारव्यवहार:।**
  अर्थ– परस्त्री के विषय में बात करना अपराध है।
- **अनुलङ्घनीय: सदाचार:।**
  अर्थ– सदाचार का कभी उल्लङ्घन नहीं करना।
- **अनतिक्रमणीया नियतिरिति।**
  अर्थ– नियति को कोई नहीं टाल सकता।
- **अत्यादर: शंकनीय:।**
  अर्थ– अत्यधिक आदर करना शंका पैदा करता है।
- **ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य:।**
  अर्थ– शार्ङ्गरव कहता है– भगवन् प्रिय व्यक्ति का हमेशा साथ देना चाहिए।
- **गरीयषी गुरो: आज्ञा।**
  अर्थ– गुरुजनों की आज्ञा महान् होती है, उनका पालन करना चाहिए।
- **दु:खशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्?**
  अर्थ– तपस्वियों से प्रर्थना नहीं करना वह पहले से कष्ट सहन करते है।
- **भोगीव मन्त्रोषधिरुद्धवीर्य:।**
  अर्थ– अपराधी भी अपने किये हुए से भीतर से जलने लगे।
- **अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ:।**
  अर्थ– अप्रिय किंतु परिणाम में हितकर हो ऐसी बात कहने वाले दुर्लभ होते हैं।
- **न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य।**
  अर्थ– मनुष्य धन की इच्छा से कभी तृप्त नहीं होता, उसका लालच बढ़ता जाता है।

- **विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।**
  अर्थ– मूर्खों के लिए मौन रहना ही सबसे बेहतर होता है।
- **सर्वे गुणा कांचनम् आश्रयन्ते।**
  अर्थ– सोने में सब गुण निहित होते हैं।
- **छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्।**
  अर्थ– राजा दिलीप ने रानी नन्दिनी को छाया की भांति अनुसरण किया है।
- **अतिस्नेह: पापशंकी।**
  अर्थ– अत्यधिक प्रेम होना भी पाप की आशंका को जन्म देता है।
- **अवेहि मां कामुधां प्रसन्नाम्।**
  अर्थ– कामधेनु गाय – मैं प्रसन्न हूं वरदान मांगो!
- **गुर्वपि विरह दु:खमाशाबन्ध: साहयति।**
  अर्थ– अनसूया शकुन्तला से कहती है– आशा का बन्धन विरह (बिछडावे) के कठोर दु:ख को सहन करने की शक्ति देता है।
- **धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावके एवाहुति: पपिता।**
  अर्थ–धुएं से व्याकुल दृष्टि वाले मेहमान की आहुति ठीक अग्नि में ही पड़ी।
- **प्रसादचिह्नानि पुर:फलानि।**
  अर्थ– पहले प्रसन्नतासूचक चिन्ह दिखाई देते है, उसके बाद फल की प्राप्ति होती है।
- **बहुभाषिण: न श्रद्दधाति लोक:।**
  अर्थ– अधिक बोलने वाले पर लोग विश्वास नहीं करते।
- **अर्थो हि कन्या परकीय एव।**
  अर्थ– कन्या हमारे लिए पराई वस्तु के सामान होती है।
- **क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।**
  अर्थ– जो व्यक्ति हर समय नवीनता को धारण करता है वही रमणीयता का स्वरूप कहलाता है।
- **नास्ति विद्या समं चक्षु।**
  अर्थ्– संसार में ब्रह्मविद्या अर्थ महापुरुष के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं है।
- **शठे शाठ्यं समाचरेत्।**
  अर्थ– मुर्ख इंसान के साथ शठता नहीं करनी चाहिये।

- **कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले।**
  अर्थ– मृत्यु समीप आने पर कोई किसी की रक्षा नहीं कर सकता है।
- **अनतिक्रमणीयो हि विधिः।**
  अर्थ– भाग्य निश्चित होता है, हमारे द्वारा कभी नहीं बदला जा सकता है।
- **काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः।**
  अर्थ– समय पर सही नीतियां हमेशा सफल होती हैं।
- **दिनक्षपामध्यगतेव संध्या।**
  अर्थ– वह दिन और रात्रि के मध्य संध्या के समान शोभायमान है।
- **बलवान् जननीस्नेहः।**
  अर्थ– माता का स्नेह सभी के लिए बलवान् (शक्ति प्रदान करने वाला) होता है।
- **अहो दुरंता बलवद्विरोधिता।**
  अर्थ– बलवान् के साथ बेर (विरोध) नहीं करना चाहिए।
- **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।**
  अर्थ– हे मनुष्य! उठो, जागो और श्रेष्ठ महापुरुषों की संगति से परमेश्वर (भगवन) को जान लो को जान लो।
- **नास्ति मातृसमो गुरु।**
  अर्थ– हमारी माता के समान कोई दूसरा गुरु नहीं (माता प्रथम गुरु होती है)।
- **लोभः पापस्य कारणम्।**
  अर्थ– लोभ ही पाप का कारण होता है।
- **न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।**
  अर्थ– जो कल्याण चाहते है, वह किसी से उम्मीद (इच्छा) नहीं करते हैं।
- **सरस्वती श्रुति महती महीयताम्।**
  अर्थ– ज्ञान सज्जन पुरुष की वाणी का पूर्ण सत्कार होता है।
- **अप्रार्थितानुकूलः मन्मथः प्रकटीकरिष्यति।**
  अर्थ–बिना प्रार्थना किये कुछ नहीं मिलता है, कामदेव (वासना) शीघ्र ही उसे प्रकट कर देगा।
- **अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः।**
  अर्थ– आभूषणों के उपयोग से अनभिज्ञ हैं।

- **आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।**
  अर्थ– कुटिल जनों के लिए सरलता नीति नहीं अपनाना चाइये।
- **परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः।**
  अर्थ– कुल कन्याये गुरुजनों की सहमति से ही वे योग्य वर का चुनाव करती हैं।
- **एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्।**
  अर्थ– एक करुण रस से अलग-अलग परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है।
- **गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया।**
  अर्थ– हमे अपनी कन्या गुणवान् पुरुष को देनी चाहिए।
- **दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।**
  अर्थ– दूसरे के धन की रक्षा करना दुःखपूर्ण हो सकता है।
- **जीवेम शरदः शतम्।**
  अर्थ– हम सभी सौ वर्ष की उम्र प्राप्त करे और 100 वर्ष तक जीवित रहे।
- **प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा।**
  अर्थ– राज्य से या निन्दा युक्त मलिन प्राणों से क्या लाभ होता है।
- **बलवती हि भवितव्यता।**
  अर्थ– होनहार बलवान् होते है।
- **सत्सङ्गतिः कथन किं न करोति पुंसाम्।**
  अर्थ– सत्संगति मनुष्यों की भलाई नहीं करती।
- **अपुत्राणां न सन्ति लोकाशुभाः।**
  अर्थ– दंपतियों को पुत्र की प्राप्ति होती है, शुभ मानी जाती है।
- **आचार परमो धर्मः।**
  अर्थ– हमारा बेहतर आचरण ही परम (बड़ा) धर्म है।
- **तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।**
  अर्थ– तेजस्वी पुरुषों की उम्र का आकलन नहीं किया जाता है।
- **मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्।**
  अर्थ– माता पिता की अच्छे तरिके से सेवा करनी चाहिये।
- **न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते।**
  अर्थ– कम उम्र वाले व्यक्ति भी तप (आचरण) के कारण आदरणीय होते हैं।

- **शीलं परं भूषणम्।**
  अर्थ– सहनशीलता सबसे बड़ा आभूषण है।
- **अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।**
  अर्थ– मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे लिए निश्चिंत हूं।
- **आचारपूतं पवनः सिषेवे।**
  अर्थ– आचारों से झरनों के कणों से सिञ्चित हवायें संलग्न होती है।
- **तीर्थोदकंक च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।**
  अर्थ– तीर्थ जल और अग्नि से शुद्धि की जाती है, अन्य पदार्थ से नहीं होते हैं।
- **उत्सवप्रियाः खलुः मनुष्याः।**
  अर्थ– मनुष्य को खुसी हमेशा पसंद होती है।
- **छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।**
  अर्थ– दुर्जनों और सज्जनों की मित्रता छाया के समान होती है।
- **न खलु धीमतां कश्चिद्विषयों नाम।**
  अर्थ– शार्ङ्गरव कहता है– विद्वानों के लिए कोई वस्तु अज्ञात नहीं होती है।
- **वाग्भूषणं भूषणम्।**
  अर्थ– वाणी रूपी आभूषण सदा बना रहता है, यह कभी नष्ट नहीं होता।
- **पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।**
  अर्थ– तेजस्वी पुरुष दुसरो की खुशी में उत्सव मानते है।
- **किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।**
  अर्थ– सज्जन मनुष्य के लिए वस्तु अलंकार नहीं होती है?
- **स्वभावो दुरतिक्रमः।**
  अर्थ– स्वभाव हमारे लिए भी दुर्लङ्घ्य होता है।
- **अकारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति में हृदयम्।**
  अर्थ– आपके प्रति मेरा स्नेह स्वार्थ रहित है, मुझे आपसे मिलने की इच्छा हो रही है।
- **क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।**
  अर्थ– महर्षि वशिष्ठ के प्रभाव से यमराज भी मेरे ऊपर आक्रमण नहीं कर सकता है।
- **को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।**
  अर्थ– प्रियंवदा कहती है – नवमालिका को गर्म जल से नहीं सींचना चाहिए।

- **दैवमविद्वांस: प्रमाणयन्ति।**
  अर्थ– मूर्ख व्यक्ति भाग्य को ही सब कुछ समझता है।
- **प्रतिबदध्नाति हि श्रेय: पूज्यपूजाव्यतिक्रम:।**
  अर्थ– पूजनीय की पूजा करना कल्याण करता है।
- **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता:।**
  अर्थ– जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान किया जाता है, उस घर से देवगण प्रसन्न होते हैं।
- **आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते। हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्॥**
  अर्थ– हाथी को खंभे से रोका जाता है। घोडे पर लगाम से काबू पाया जाता है और स्त्री हृदय से प्रेम करने से ही वश में हो जाती है।
- **दीर्घसूत्री विनश्यति।**
  अर्थ– प्रत्येक कार्य में अनावश्यक विलंब करने वाला कभी सफल नहीं होता है।
- **साहसे श्री प्रतिवसति।**
  अर्थ– साहस में लक्ष्मी निवास करती हैं।
- **पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।**
  अर्थ– विवेकी लोगों की आस्था भौतिक शरीरों से नहीं होती है, यह यश रूपी शरीर की रक्षा करने से होश है।
- **अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लता:।**
  अर्थ– शकुन्तला के पतिगृह गमन के बाद पशु-पक्षी औभी पीड़ित है। लताओं से पीले पते टूट कर जमीन पर गिर रहे हैं।
- **चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे।**
  अर्थ– चित्र में लिखे हुए बाण उद्योग में लगे हुए की भांति लगते है।
- **धैर्यधना हि साधव:।**
  अर्थ– सज्जन लोगों का धैर्य ही उनका सबसे बड़ा धन होता है।
- **न हि सर्व: सर्वं जानाति।**
  अर्थ– सभी लोग सब कुछ नहीं जान सकते हैं।

- **प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।**
  अर्थ– मुर्ख लोग विघ्नों के डर से कार्य प्रारंभ नहीं करते।
- **बलवता सह को विरोधः।**
  अर्थ– बलशाली के साथ विरोध नहीं करना चाहिए।
- **ईशावास्यमिदं सर्वं।**
  अर्थ– ईश्वर जगत में सभी जगह व्याप्त है।
- **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**
  अर्थ– शरीर धर्म का मुख्य साधन है।
- **अहो मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः।**
  अर्थ– ब्रह्मा ने पत्रलेखा के प्रति पक्षपात किया है. उसका सौन्दर्य गन्धर्वों से भी अधिक सूंदर है।
- **चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।**
  अर्थ– समय के साथ क्रम बदलता रहता है, संसार में भाग्य पंक्ति पहिए के अरो की तरह चलती है।
- **योधरीभूत चतुःसमुद्रां, जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्।**
  अर्थ– चार थनों वाली नन्दिनी गाय की रक्षा इस प्रकार की जैसे चार समुद्रों वाली पृथ्वी ही गाय हो।
- **आज्ञा गुरुणामविचारणीया।**
  अर्थ– बड़ों की आज्ञा का विचार (पालन) करना चाहिए।
- **चारित्र्येण विहीन आढ्योपि च दुर्गतो भवति।**
  अर्थ– चरित्रहीन इंसान धनवान् होने के बाद भी दुर्दशा को प्राप्त होता है।
- **पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते।**
  अर्थ– हमारे गुण ही शत्रुऔर मित्र बनाते हैं।
- **ऋद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः।**
  अर्थ– समृद्धशाली राज्य इंद्र के शासन समान होता है।

अनुज कुमार पाठकः
संस्कृत शिक्षक (के. वि धार)

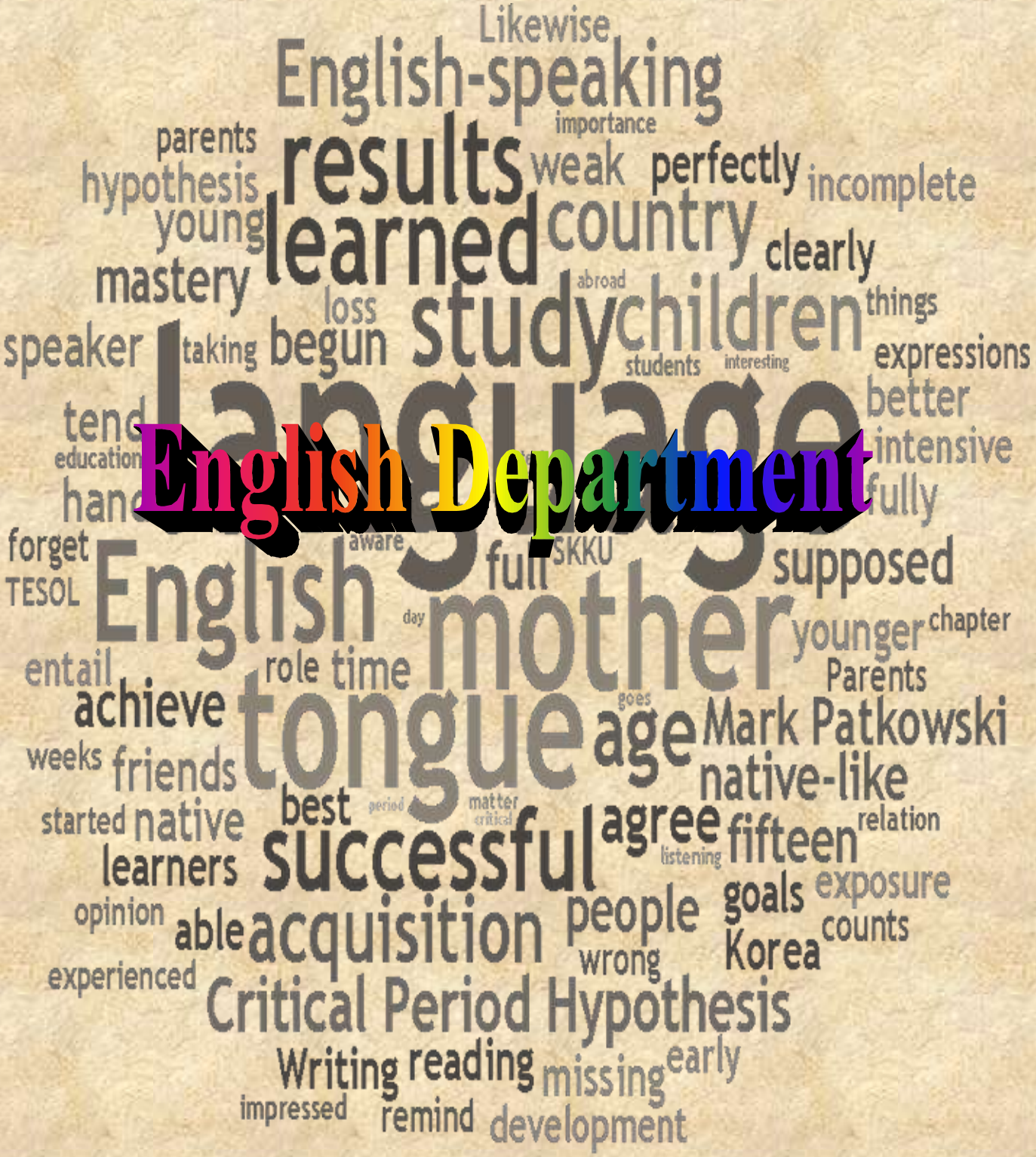

English Department

World's Super Sentences

- **Shakespeare-**
  Never play with the feeling of others because you may win the game but the risk is that you will surely loss the person for a life time.

- **Napoleon -**
  The world suffers a lot. Not because of violence of bad people, But because of the silence of good people.

- **Einstein-**
  I am thankful to all those who said no to me.It's because of them, I did it myself.

- **Abraham Lincoln-**
  If friendship is your weakest point then you are the strongest person in the world.

- **Shakespeare-**
  Laughing faces do not mean that there is absence of sorrow but it means that they have the ability to deal with it.

- **William Arthur-**
  Opportunities are like sunrises, if you wait too long, you can miss them.

- **Filter-**
  When you are in the light everything follows you, But when you enter into the dark, Even your own shadow doesn't follow you.

- **Shakespeare-**
  Coin always makes sound but the currency notes are always silent. So when your value increases keep quiet.

- Renu Kanesh, 10th A

Did you know ?

- Scissors were invented by Leonardo da Vinci.
- Saudi Arabia is the land of no Rivers.
- A blue whale's heart can be as large as car.
- Pearls melt in vinegar.
- Venus is the only planet that rotate clockwise.
- Vatican city is the only country within a country.
- Singapore is the largest Country with no farms.
- A chicken with red earlobes will always produce brown eggs.

- Renu Kanesh, 10th A

Struggles of Our Life

Once upon a time, a daughter complained to her father that her life was miserable and that she didn't know how she was going to make it. She was tired of fighting and struggling all the time. It seemed just as one problem was solved, another one soon followed. Her father, a chef, took her to the kitchen. He filled three pots with water and placed each on a high flame.

Once the three pots began to boil, he placed potatoes in one pot, eggs in the second pot and ground coffee beans in the third pot. He then let them sit and boil, without saying a word to his daughter. The daughter moaned and impatiently waited, wondering what he was doing. After twenty minutes he turned off the burners. He took the potatoes out of the pot and placed them in a bowl. He pulled the eggs out and placed them in a bowl. He then ladled the coffee out and placed it in a cup.

Turning to her, he asked, "Daughter, what do you see?" "Potatoes, eggs and coffee," she hastily replied.

"Look closer", he said, "and touch the potatoes." She did and noted that they were soft.

He then asked her to take an egg and break it. After pulling off the shell, she observed the hard-boiled egg.

Finally, he asked her to sip the coffee. Its rich aroma brought a smile to her face.

"Father, what does this mean?" she asked.

He then explained that the potatoes, the eggs and coffee beans had each faced the same adversity-the boiling water. However, each one reacted differently. The potato went in strong, hard and unrelenting, but in boiling water, it became soft and weak. The egg was fragile, with the thin outer shell protecting its liquid interior until it was put in the boiling water. Then the inside of the egg became hard. However, the ground coffee beans were unique. After they were exposed to the boiling water, they changed the water and created something new.

"Which one are you?" he asked his daughter. "When adversity knocks on your door, how do you respond? Are you a potato, an egg, or a coffee bean?"

Moral: In life, things happen around us, things happen to us, but the only thing that truly matters is how you choose to react to it and what you make out of it. Life is all about leaning, adopting and converting all the struggles that we experience into something positive.

- Rajvee Chouhan, 10th 'A'

Are we students only aware of seven jobs?

Majority of students in India are aware of just seven career paths, out of over 250 options they can pursue in the country. Doctor, Engineer (To be specific from IITs and NITs) — these two are the only options available for their future. I am not generalising, there are students who are made for IITs and AIIMS.

But even after being a wonderful painter, we choose to be IITian. Even after having a perfect voice, we opt Computer Science over music. Even after being an excellent dancer, we tend to go for IIM.

I would share one of the example: Vishwanathan Anand, grandmaster of chess has his career in chess. We may even think that what he does for living and chess is just a hobby. This is the mindset we are holding; we can't even imagine someone can actually has a career in chess.

Teachers, parents, friends and mentors are all part of the decision-making process when it comes to a child deciding on his/her career. Thus, if parents and teachers can build their own awareness regarding new career options coming up, then they can be a very helpful part in their child's career decisions.

Parents need to be aware of their child's strength areas which contribute to their career success.

So, be confident and careful while making a decision and work in the direction of making your decision successful.

- Poornima Raghuvanshi X A

Did You Know…????

- The Sun is a star.
- All stars are made of hot and glowing gases.
- Sun is not the largest star. It only seems larger because it is the closest star from the earth.
- The Sun provides us energy in the form of heat and light.
- The Sun is around 149.8 million Kms. Away from Earth.
- The Sun's radius is 6371 kms.

Importance Of Education

Education is an important issue in one's life. It is the key to success in the future, and to have many opportunities in our life. Education has many advantages for people. For instance, it illuminates a person's mind and thinking. It helps students to plan for work, or pursue higher education by graduating from university. Having education in and area helps people think, feel, and behave in a way that contributes to their success, and improves not only their personal satisfaction but also their community. In addition, education develops human personality, thoughts, and social skills. It also prepares people for life experiences. It makes people have a special status in their own society and everywhere they live. I believe that everyone is entitled to have education "from cradle to grave". There are various benefits of having education, such as having a good career, having a good status in society, and having self-confidence.

Education is the most powerful weapon which you can use to change the world!

- Mokshita Harwal, VII A

Tongue Twisters

1) If practice makes perfect and perfect needs practice, I'm perfectly practiced and practically perfect.
2) Betty bought butter but the butter was bitter, so Betty bought better butter to make the bitter butter better.
3) I thought a thought. But the thought I thought wasn't the thought I thought I thought. If the thought I thought I thought had been the thought I thought, I wouldn't have thought I thought.

Devyanshi Muvel, 10th A

Fun Facts About π

1) The symbol for Pi has been in use for over 250 years. The symbol was introduced by William Jones, a Welsh mathematician, in 1706. The symbol was made popular by the mathematician Leonhard Euler.
2) Since the exact value of pi can never be calculated, we can never find the accurate area or circumference of a circle.
3) March 14 or 3/14 is celebrated as pi day because 3.14 are the first digits of pi. Math nerds around the world love celebrating this infinitely long, never-ending number.
4) The record for reciting the greatest number of decimal places of Pi was achieved by Rajveer Meena at VIT University, Vellore, India on 21 March 2015. He was able to recite 70,000 decimal places. To maintain the sanctity of the record, Rajveer wore a blindfold throughout the duration of his recall, which took an astonishing 10 hours.
5) Pi is actually a part of Egyptian mythology. People in Egypt believed that the pyramids of Giza were built on the principles of pi. The vertical height of the pyramids has the same relationship with the perimeter of their base as the relationship between a circle's radius and its circumference. The pyramids are phenomenal structures and are one of the Seven Wonders of the World.
6) We will never be able to find all the digits of pi because of its very definition as an irrational number. Babylonian civilization used the fraction 3 ⅛, the Chinese used the integer 3. By 1665, Isaac Newton calculated pi to 16 decimal places. Computers hadn't been invented yet, so this was a pretty big deal. In the early 1700s Thomas Lagney calculated 127 decimal places of pi, reaching a new record. In the second half of the twentieth century, the number of digits of pi increased from about 2000 to 500,000 on the CDC 6600, one of the first computers ever made. This record was broken again in 2017 when a Swiss scientist computed more than 22 trillion digits of pi. The calculation took over a hundred days.

Darshil Khatod IX A

The Queen Cassiopeia

Once upon a time, there was a King and a Queen of the Bourbon Empire. They lived in a very beautiful palace of Versailles. The name of the king was Sharaf and the queen was Cassiopeia. The queen was very beautiful and used to wear a pretty bracelet with five diamonds in it. She was very proud of her beauty and always talked about her beauty. One day, she met a beautiful lady who asked her "why are you so proud of your beauty?" The Queen answered her rudely, "I am the queen and the most beautiful one on this Earth." Then she went away into her palace proudly. The next day, the king asked Cassiopeia why was she upset. The queen did not answer him and walked towards the garden where there were beautiful flowers and butterflies. The sky was pink. Cassiopeia became very happy by looking at all the beautiful things in the garden. Suddenly, she saw God in the garden who advised her not to be proud of her beauty as there are many other things in the world which are better than you. She finally realised that there can be other people or things which are more beautiful than her. Since, she realised her mistake, God granted her a wish that she will become a star in the galaxy. There is Cassiopeia Constellation in the universe which has only five stars in it. Those five stars are supposed to be the twinkling diamonds of the Queen Cassiopeia's bracelet.

- Surabhi Dodiyar, IX A

Riddle time!!!

Riddle 01: What gets wet while drying?

Riddle 02: What can you keep after giving to someone?

Riddle 03: I shave every day, but my beard stays the same. What am I?

Riddle 04: I have branches, but no fruit, trunk or leaves. What am I?

Riddle 05: The more of this there is, the less you see. What is it?

Think……. Think……..Think……

ANSWERS:

1)Towel 2)Your word 3)A Barber 4)A Bank 5)Darkness

Amazing Facts!!!

1. A blue whale eats about 3 tonnes of food everyday.
2. The Elephant trunk has no bones but has about 40,000 muscles.
3. A giraffe's tongue is long enough to clean its ear.
4. Horses show their anger by laying back their ears.
5. The heart beats more than 2 hundred crore times during an average human lifespan.
6. Message from brain to the different parts of body is sent at a speed of about 400 km per hour.
7. The human mouth produces about 1.5 litres of saliva in a day.

-

- V S Kriti, VIII A

The Festivals of India

As we divide the Indian festivals into National, Religious and Seasonal, we see how they differ from each other. In general, National Festivals are celebrated in the honour of reputable people and events. The religious ones follow legends of faith and their belief. The seasonal ones are celebrated with each season that we experience varying from region to region. National festivals include Republic Day, Independence Day, Gandhi Jayanti and others. These festivals are celebrated all over India. Religious festivals are Holi, Diwali, Rakhi, Eid, Dussehra. People in India look forward to festivals all around the year. People also repair their homes, paint them to make it look new. Festivals are very important as they make us forget our cultural and religious differences. The sole purpose of celebration and happiness is to help us embrace our culture and religion. Festivals unite people and helps in breaking the monotony of life. The festivals fill our lives with colours and enthusiasm. They bring us closer and eliminate feelings of Communal hatred. They further strengthen the bond of community and remove malice from people's heart. Therefore, festivals are quite important and must be celebrated with zeal and enthusiasm.

- Tejasvini Upadhyay, IX A

Examination Department

Class 10th Result

HIMANSHU CHOUHAN
(95.85%)

SHRADDHA TIWARI
(94.2%)

RISHIKA BAMANKA
(91.6%)

HARSHWARDHAN SONI
(90.8%)

BHUMIKA DHARVE
(90%)

Class 12th (Science) Result

RAJASI DESHPANDE
(95.6%)

RISHABH TADWAL
(93.4%)

GURUSHIKHA CHOUHA
(91.4%)

DEVESH RATHOD
(90.6%)

Class 12th (Commerce) Result

CHITRANSHI SHARMA

(94.4%)

MANSA SINGH

(90.2%)

BHUMI JOSHI

(90%)

SCHOOL STAFF

संपादक मण्डल

- हिन्दी विभाग - श्रीमती विनीता भट्ट
- संस्कृत विभाग - श्रीमान अनुज कुमार पाठक
- अंग्रेजी विभाग - सुश्री सोनाली राय
- प्रथम पृष्ठ - श्रीमती नेहा चौहान
- प्राथमिक विभाग - श्रीमती मंजरी अय्यर
- कम्प्युटर विभाग - श्रीमती मनीषा मालवीय
- परीक्षा विभाग - श्रीमती सुनीति चोरे
- संपादन - श्रीमान नवोदित यादव
- परामर्शदाता - श्रीमान आनंद अय्यर

केन्द्रीय विद्यालय धार
KENDRIYA VIDYALAYA DHAR

सत्र : 2022-23

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Chanakyapuri, Dhar. (M.P.)

07297 – 222540

dhar.kv@gmail.com

www.dhar.kvs.ac.in